MAH/NAN/10936/2015
ISSN : 2454-7905
SJIF 2021 - Impact Factor: 6.91

# Worldwide International Inter Disciplinary Research Journal

(A Peer Reviewed)

Year - 6, Vol.I, Special Issue-XXVIII, 14 April 2021

# डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे विचार

# Thoughts of Dr. Babasaheb Ambedkar

Editor : Dr. Rajesh Gangadharrao Umbarkar

Address for Correspondence

***Mrs. Pallavi Laxman Shete***

Editor in Chief : Worldwide International Inter Disciplinary Research Journal (A Peer Reviewed Reffered)
Principal, Sanskriti Public School, Nanded (MH, India) Email : shrishprakashan2009@gmail.com

***Dr. Rajesh G. Umbarkar***

House No. 624 - Belanagar, Near Maruti Temple, Taroda (Kh.) Nanded - 431605 (India - Maharashtra)
Email - umbarkar.rajesh@yahoo.com, shrishprakashan2009@gmail.com Mob. No. 9623979067
Director : Mr. Tejas Rampurkar (For International Contacts only + 91-8857894082)

(Arts - Humanities - Social Sciences - Sports, Commerce, Science, Education, Agriculture, Management, Law, Engineering, Medical, Ayurveda, Pharmaceutical, Journalism, Mass Communication, Library Science Faculty's)



Be AatmaNirbhar. Use Kaagaz

ISSN: 2454 – 7905

*SJIF Impact Factor:* 6 . 91

# Worldwide International Inter Disciplinary Research Journal

***A Peer Reviewed Referred Journal***

**Quarterly Research Journal**

(Arts-Humanities-Social Sciences- Sports, Commerce, Science, Education, Agriculture, Management, Law, Engineering, Medical-Ayurveda, Pharmaceutical, MSW, Journalism, Mass Communication, Library sci., Faculty's)

www.wiidrj.com

**Vol. I Special ISSUE - XXVIII Year – 6 14 April 2021**

**SPECIAL ISSUE FOR**

## DR. BABASAHEB AMBEDKAR THOUGHT'S

## डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे विचार

**Special Issue Editor by**

**Dr. Rajesh Gangadharrao Umbarkar**

Dept. of Economics

N. S. B. College, Nanded.

**Editor in Chief : Mrs. Pallavi Laxman Shete**

Principal, Sanskrti Public School, Nanded. (MH. India) Email: Shrishprakashan2009@gmil.com

**Director : Mr. Tejas Rampurkar**

(For International contact only +91-8857894082)

**Address for Correspondence :** House No.624 - Belanagar, Near Maruti Temple, Taroda (KH), Nanded – 431605 (India -Maharashtra) **Email:** Shrishprakashan2009@gmil.com

umbarkar.rajesh@yahoo.com **Mob. No:** +91-9623979067

**Website:** www.wiidrj.com

# INDEX


| Sr. No. | Title of the Paper | Name of Author | Page No. |
|---|---|---|---|
| 01. | ECONOMIC THOUGHT OF DR.BABASAHEB AMBEDKAR | Sradhanjali Swain | 01 |
| 02. | A BRIEF STUDY OF DR. B.R.AMBEDKAR AND HIS THOUGHT ON AGRICULTURE AND SOCIAL JUSTICE | Dr. Shyamal Chandra Sarkar | 07 |
| 03. | "DR. BABASAHEB AMBEDKAR: SOCIO-ECONOMIC APPROACH" | Suryabhan Samadhan Wayal | 13 |
| 04. | DR. BABASAHEB AMBEDKAR - THOUGHTS ON BUDDHISM | Meena L. Hivare | 15 |
| 05. | ROLE OF DR. B. R. AMBEDKAR IN NATION BUILDING WITH NATIONALISM | Dr. Sanjay G. Kulkarni | 17 |
| 06. | CONTEMPORARY RELEVANCE OF DR.AMBEDKAR'S IDEAS ON RELIGION | Dr. Harshad Bhosale | 20 |
| 07. | डॉ. बी. आर. आंबेडकरांच्या वैचारिक परीपेक्षातील सामाजिक विचार: एक शोध | डॉ. नवनाथ गोविंदराव अडकिणे सहा. प्रा. इब्राहीम जमन तडवी | 25 |
| 08. | "दलित साहित्य और डॉ बाबासाहेब आंबेडकर" | प्रा. डॉ. बालाजी रामराव गायकवाड | 29 |
| 09. | डॉ. बाबासाहेब आंबडेकरांचे शैक्षणिक विचार | प्रा. डॉ. चौधरी दत्तात्रय मल्हारी | 33 |
| 10. | लोकशाही - भारत एक राष्ट्र | प्रा. अमोल दीपकराव धुळे | 36 |
| 11. | प्रसारमाध्यमात नागरिकांचे मूलभूत हक्क | प्रा. डॉ. सुहास दुर्गादास पाठक | 41 |
| 12. | डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे सामाजिक विचार | प्रा. मोहोकार हरिहर शिवदास | 45 |
| 13. | डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांची सामाजिक समता | प्रा. अरुण महादेव राख | 48 |
| 14. | *डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांची राजकीय विचारधारा एक चिंतन* | *प्रा.डॉ. महेश मोटे* | 53 |
| 15. | डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे राष्ट्र उभारणीतील योगदान | डॉ. नितीन आहेर | 60 |
| 16. | डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर यांचे आर्थिक व सामाजिक विचार | प्रा. डॉ. रत्नाकर रामराव कांबळे | 64 |






Be AatmaNirbhar. Use Kaagaz

# "दलित साहित्य और डॉ बाबासाहेब आंबेडकर"

प्रा. डॉ. बालाजी रामराव गायकवाड

(हिंदी विभाग अध्यक्ष) महाराष्ट्र महाविद्यालय निलंगा जी.लातूर

साउथ ब्यूरो कमीशन 27 जनवरी 1919 से 6 दिसंबर 1956 का यह कालखंड दलित साहित्य का महत्वपूर्ण कालखंड है। यह काल बाबासाहेब आंबेडकर के कार्य से प्रभावित हुआ है हजारों वर्षों की विषम समाज रचना उसके आगे चल रहे इने गिने सुधारना वादी आंदोलन तेजी से बढ़ने वाला कांग्रेस का राष्ट्रीय आंदोलन अल्पसंख्यकों को परतंत्रता में मिला हुआ राजनीतिक महत्व अंग्रेजों की ओर से किस्त- दर किस्त से मिलने वाली सुविधाएं भारत में आने वाले ब्रिटिश कमीशन गोलमेज परिषद चुनाव,दूसरा महायुद्ध, भारतीय स्वतंत्रता, विभाजन, संविधान, राजनीति, दलितों का धर्मांतरण और दलितों के नेतृत्व पर विराजमान बाबा साहब अंबेडकर इन सब ऐतिहासिक घटनाओं से दलित साहित्य प्रभावित हुआ।

बाबा साहेब की जीवनगाथा उनका कार्य और वाणी तथा उनके अमूल्य विचारों से दलित समाज, दलित साहित्य और दलित लेखक जागृत हुआ। इसलिए बाबा साहब और दलित साहित्य का गहरा संबंध है।

दलित साहित्य ही अंबेडकरवादी साहित्य है ,क्योंकि बाबा साहब अंबेडकर के विचारों और आंदोलनों से दलित समाज को स्वाभिमान मिला है। यदि बाबा साहब ना होते तो हम ना होते दलित समाज में प्रत्येक व्यक्ति का एक दूसरे को अभिवादन करते हुए जय भीम का उच्चारण करना भी इस बात का द्योतक है कि बाबा साहब अंबेडकर ही हमारी सच्ची प्रेरणा है। दलित साहित्य के संदर्भ में डॉक्टर तेज सिंह कहते हैं "अंबेडकरवादी विचारधारा के तहत दलितों द्वारा लिखा गया साहित्य ही दलित साहित्य है।" दलित साहित्य के मूल में डॉ बाबासाहेब आंबेडकर के क्रांतिकारी विचार विद्यमान है। इसलिए आज दलित साहित्य को दलित साहित्य नहीं बल्कि अंबेडकरवादी साहित्य कहना चाहिए इसका कारण यह है कि दलित साहित्य बौद्ध दर्शन के नींव पर खड़ा है जिसमें तथागत भगवान बुद्ध के प्रज्ञा, शील ,करुणा ,समानता ,मानवता ,अहिंसा जैसे तत्व समाविष्ट है। यह साहित्य दलितों के सामाजिक ,राजनीतिक ,आर्थिक एवं सांस्कृतिक उन्नति का पथदर्शक है।

अंबेडकर साहित्य के विषय में जीवनवादी और यथार्थवादी भूमिका है।वे कहते हैं ऋग्वेद अर्थवेद मैंने कितनी बार पढे हैं, उस पर समाज और मानव उन्नति के लिए नीतिमत्ता के लिए बलवर्धक क्या है, यह मेरी समझ में नहीं आता इस विधान से भी पोषण होना चाहिए वो कहते हैं, विषमता का समर्थन करने वाली मनुस्मृति हमें मान्य नहीं है।यह कह कर वह रुकते नहीं वे उसे जलाने की भाषा बोलते हैं। उनकी मान्यता है कि, साहित्य से समता का संवर्धन और विषमता का विध्वंस होना चाहिएं।

बाबा साहब को अपनी किताबें अपनी संतान से भी बढ़कर प्रिय है वे कहते हैं कि "पुस्तक लिखते समय पता ही नहीं चलता कि समय कैसे बीत जाता है यह मेरी समझ में नहीं आता।लेखन करते समय मेरी पूरी पूरी शक्ति एकत्रित होती है मैं किसी की परवाह नहीं करता मैं कभी-कभी तो रात भर पढ़ता लिखता बैठा हूं मेरे चार पुत्र होने पर मुझे जितना आनंद हुआ था उससे दुगना आनंद मुझे मेरी पुस्तक के प्रसिद्ध होने पर होता है।" इसमें बाबा साहब और पुस्तकों का रिश्ता कितना अटूट है यह स्पष्ट होता है बाबा साहब के पुस्तक प्रेम से तथा उनकी साहित्य से मानवतावादी विचारों की अपेक्षा तथा लेखक की आम आदमी के प्रति प्रतिबद्धता पर आधारित उनके साहित्यिक विचार की धारणा यथार्थवादी और जीवनोन्मुखी है यह दिखाई देता है।

दलित साहित्य को सबसे अधिक डॉक्टर बाबा साहब अंबेडकर के जीवन और साहित्य ने ही प्रभावित किया है शताब्दियों से अशिक्षा अज्ञान एवं दरिद्रता के अंधेरे में कराहते हुए इस वर्ग के लिए डॉक्टर बाबा साहब मसीहा के रूप में प्राप्त हुए। जिसने उन्हें समता, शिक्षा, सम्मान का प्रकाश प्रदान किया डॉ बाबासाहब आंबेडकर को बचपन में ही अस्पृश्यता के अभिशाप का आभास हो गया था इस संबंध में डब्लू. एंन.कुबेर ने लिखा है कि छूत का प्रहार कितना भीशन, है इसका एहसास अंबेडकर को छात्र जीवन में ही हो गया था एक गाड़ीवान ने उन्हें और उनके भाई को अपने साथ गाड़ी में बैठने नहीं दिया था।अंबेडकर और उनके भाई रेलवे स्टेशन से गोरेगांव जा रहे थे तब उन्होंने एक गाड़ी भाड़े पर तय की अभी गाड़ी कुछ दूर ही आई थी की , गाड़ीवान को यह पता चल गया कि लड़के किस जाति के है तब उसने जाने से इंकार कर दिया इन दोनों बच्चों ने गाड़ीवान को दुगना किराया दिया भीमराव के बड़े भाई ने गाड़ी हाकी और गाड़ीवान गाड़ी के पीछे पीछे पैदल चला की छुत का भूत न चढ़ जाए रास्ते उन्हें पीने के लिए पानी तक नहीं मिला बाबा साहब को पता चला कि वह ऐसी जाति में पैदा हुए है जिन्हें छूना पाप है यह एक कटु अनुभव था कि कोई नाई उनके बाल नहीं काटता था और भीमराव की बहन को ही उनके बाल काटने पड़ते थे अछुतो के लिए यह निरादर भाव सर्वत्र व्याप्त था।

साथ ही साथ छात्र जीवन में भी ऐसे कटु अनुभव आते रहे, अध्यापक उनकी कापी को छूते नहीं थे वे छात्रों के साथ खेल नहीं सकते थे इस कारण डॉ बाबासाहेब आंबेडकर के मन में हिंदुओं और हिंदू धर्म के प्रति घृणा पैदा हो गई थी। सेवा के दौरान उन्हें जो अनुभव आए वे रोंगटे खड़े करने वाले हैं जब वे बड़ौदा पहुंचे तो उन्हें लेने के लिए स्टेशन पर कोई नहीं आया रहने के लिए उन्हें जगह नहीं मिली किसी भी होटल में उन्हें प्रवेश नहीं मिला कोई भी मकान मालिक उन्हें किराएदार के रूप में रखने को तैयार नहीं था अंत में नाम बदलकर उन्होंने एक पारसी के होटल में आश्रय लिया मालिक को जब असलियत का पता चला तो उन्हें मारने दौड़े अपने दफ्तर में भी उन्हें बहुत ही अपमानजनक व्यवहार मिला पतीत होने के डर से चपरासी फाइलों को उनके ऊपर या मेज पर फेंक देता था उन्हें पीने का पानी भी नहीं मिलता था इस प्रकार डॉक्टर अंबेडकर ने अपना संपूर्ण जीवन दलित समाज को अस्पृश्यता के इस अभिशाप से मुक्ति दिलाने में लगा दीया इसलिए दलित साहित्य ही अंबेडकरवादी साहित्य है

डॉक्टर अंबेडकर जी को हम दलित साहित्य का प्रेरणा स्रोत मानते हैं।क्योंकि उन्होंने अपने जीवन काल के सिद्धार्थ महाविद्यालय मिलिंद महाविद्यालय आदि की स्थापना की हर स्तर पर जाकर बाबा साहब ने हमें मार्गदर्शन किया है। इस बात को स्पष्ट करते हुए विद्रोही साहित्यिक बाबुराव बागुल लिखते हैं "बाबासाहेबानी कुठल्याही निर्णायक लढा मरनाच्या दारातुन जानारा पुकारला असता तरी लोक त्यात सहभागी झाले असते, हसत हसत मेले असते ह्या लढ्यातुन आणि त्यातून बनलेल्या माणसातून दलित साहित्य जन्माला आले. डॉ.बाबासाहेब त्याचे जनक तसेच दलिताचे पहिले महान लेखक "

बागुल जी के इस विचारों से यह स्पष्ट होता है कि डॉक्टर अंबेडकर जी पर लोग कितने मर मिटे थे उनको अपना मसीहा मानते थे। डॉक्टर योगेंद्र मेश्राम लिखते हैं,"डॉ. बाबासाहेब आंबेडकराच्या समतावादी,परिवर्तनवादि व विज्ञानवादी क्रांतिकारि विचाराची दलित साहित्याला बलवान अशी प्रेरणा लाभली आहे. साथ ही साथ प्रा गो मां कुलकर्णी लिखते हैं "यह साहित्य अंबेडकरवादी है।" डॉ शंकर राव खरात लिखते हे सर्वच लेखन डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर यांच्या प्रेरनेतून निर्माण झाले आहे.

इससे यह स्पष्ट होता है कि दलित साहित्य ही अंबेडकरवादी साहित्य है। इसलिए अंबेडकरवादी साहित्य अंबेडकरी साहित्य परिवर्तन वादी साहित्य विद्रोही साहित्य बौद्ध साहित्य आदि नामों से जाना जाता है क्योंकि इसके मूल में केवल डॉक्टर बाबा साहब अंबेडकर जी के विचार है डॉ बाबासाहेब अंबेडकर जी ने अपने जीवन काल में निम्नलिखित किताबें लिखी जो इस प्रकार है, अंक

१) कास्ट इन इंडिया (१९१७)
२) स्मॉल होल्डिंग्स इन इंडिया अँड देयर रिमेंडीज
३) द प्राब्लम ऑफ द रुपी (१९२३)
४) द इवाल्यूएशन ऑफ प्राविंसियल फाइनेंस इन ब्रिटिश इंडिया(१९२५)
५) एनीहिलेशन ऑफ कास्ट (१९३८)
६) फेडरेशन वर्सेज फ्रीडम
७) मिस्टर गांधी अँड एमेनंसीपेशन ऑफ द अनटचेबल्स(१९४३)
८) रानाडे गांधी एंड जिन्ना (१९४३) तथा थॉट्स ऑन पाकिस्तान(१९४५)
९) व्हाट कांग्रेस एंड गांधी हैव डन टू द अनटचेबल्स
१०) हु वेयर "शूद्राज (१९४६)
११) स्टेट्स अँड माइनारटीज (१९४७)
१२) द अनटचेबल्स (१९४८)
१३) थॉट्स ऑन लिंग्विस्टिक स्टेट्स (१९५५)
१४) दी. बुद्ध अँड हिज धम्म(१९५७)

यह किताबें तथा डॉक्टर अंबेडकर के भाषणों को महाराष्ट्र शासन के शिक्षा विभाग ने राइटिंग एंड स्पीचेस नाम से 14 खंडों में प्रकाशित किया बाद में भारत सरकार ने जब डॉक्टर बाबासाहेब आंबेडकर फाउंडेशन दिल्ली की स्थापना की तो उसने भी डॉक्टर अंबेडकर के इस संपूर्ण साहित्य का प्रकाशन किया अंबेडकर के इस साहित्य का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद होता रहा और दलितों में चेतना का प्रसार होता रहा उन्होंने प्रबुद्ध भारत ,बहिष्कृत

भारत ,तथा मूकनायक आदि समाचार पत्रों का संपादन किया। जिससे दलितों को अभिव्यक्ति के मार्ग चला और जब डॉक्टर अंबेडकर ने मराठी में अपनी आत्मकथा मैं कैसे बना(मी कसा झालो) लिखी तो में आत्मकथा लिखने की होड़ सी लग गई दलित साहित्य और समाज के ऊर्जा का केंद्र सिर्फ डॉ बाबासाहब जी है अगर बाबा साहब पैदा नहीं होते तो इस दलित समाज की क्या स्थिति होती इसकी हम कल्पना सकते इस संबंध में डॉ वासुदेव मुलाटे कहते हैं,शिक्षणातून अस्मिता जागविली आणि आपल्या दैन्याचा ... त्यांचा आले बाबासाहेबांच्या चळवळीमुळे आणि विशेषता धर्मांतरामुळे दलित समाजाला आत्मभान आले

बाबा साहब के धर्मांतर से ही दलित साहित्य की रचना होनी शुरू हुई ।बाबा साहब के धर्मांतर के ... उनका निधन हो गया। उनके निधन के बाद दलित आंदोलन के समान ही दलित लेखकों में भी फूट ... साहब द्वारा दिए गए बौद्ध धर्म की दलितों में वृद्धि हो इसलिए बौद्ध विचार प्रणाली को प्रोत्साहित करने ... भक्तों ने दलित साहित्य का विरोध किया और बौद्ध साहित्य का समर्थन किया। पर आगे चलकर दलित ... जातियों,उपजातियों और कबीलों में दलित लेखक पैदा हुए, यह सब लेखक बौद्ध नहीं थे।

बौद्ध धर्मियों ने धर्मांतरण के बाद तुरंत बौद्ध साहित्य ही लिखा जाना चाहिए ऐसा आग्रह रखा ... इसके अतिरिक्त बुद्ध लेखक बौद्ध साहित्य की रचना न कर बस दलित साहित्य की एकांगी और आक्रमक ... करने में संलग्न हो गए। दलितों में अनेक जातियां उप जातिया कबीलो तथा आदिवासी लेखकको की कृतियों ... साहित्य को मौलिक रचनाओं से समृद्ध किया है।इसलिए दलित साहित्य केवल नवबौद्ध लेखकों का साहित्य ... गया जिसके परिणामस्वरूप बौद्ध विचार प्रणाली आधार पर साहित्य की चर्चा पीछे पड़ गई।

दलित साहित्य के उदय के साथ दलित साहित्य की समीक्षा लेखन शुरुआत हुई।इस कारण ... लेखन को प्रत्यक्ष साहित्य का आधार कम मिला। जिसके परिणामस्वरूप प्रारंभिक काल में समीक्षा संक्षिप्त ... भी इस समीक्षा का बड़ा हिस्सा अखबारी समीक्षा से भरा हुआ था, जिसमें बस दलित साहित्य का बोध ... कराना किताबों के विषय में मत व्यक्त करना और उन पर मन्तव्य देना आदि शामिल था। दलित लेखक ... दलित का समर्थन किया क्योंकि उन्हें इस नई धारा को प्रस्थापित करना था इसी कारण उनके लेखन ... स्तुति, कौतूहल और प्रशंसा की भावना प्रबलता से व्यक्त हुई। दलित साहित्य की चर्चा में प्रारंभ से ही ... सवर्ण समीक्षकों ने भाग लिया।

उपर्युक्त तथ्यों से यह स्पष्ट होता है कि दलित साहित्य और बौद्ध साहित्य लिखने वाले लेखकों ... के दो वर्ग दिखाई देते हैं इनके बारे में बाबा साहब ने कहा है कि दलितों में आत्म सम्मान का भाव ... चाहिए उन्होंने यह भी कहा है कि दलितों को सत्ता के सूत्र और कानून बनाने की ताकत हासिल करनी चाहिए ... गए जीवन की विवशता सहायता और मजबूरी और गुलामी से जीने वाले दलितों के लिए यह विचार ... क्रांतिदर्शी थे। इस प्रकार दलित साहित्य की प्रेरणा का स्रोत वर्तमान काल में तो डॉक्टर बाबा साहब ... जीवन साहित्य और विचारधारा ही है सभी भाषाओं के दलित लेखक एकमत से इसे स्वीकार करते हैं।

संदर्भ सूचि:

१) दलित साहित्य स्वरूप और संवेदना- सं. डॉ. गडपायले

२) दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र - शरण कुमार लिंबाळे

३) दलित साहित्य के प्रतिमान- डॉ. तेजसिंह

४) मुप्टा स्मरणिका- २०१६